बहती है, धीरे-धीरे या नदी

यहाँ एक नदी बहती थी,
शांत से, मन्द से, खुशी से।
चलती है, धीरे-धीरे या नदी
कल-कल रव से।

चलती है, हवा धीरे-धीरे
फूलों के सुगन्ध से
सुनती हूँ, मैं जो
हवा कि निर्मल आवाज़।

नीली फूलों छा गए
आसमान के नीचे
बहती है या नदी
एकांत से, मधुर गीत से।

चल-चल, कल-कल
चलती है, या नदी
विविध भाव से।
चल-चल कल-कल रव से
बहती है या नदी

आति हूँ, मैं इस
नदी की तट पर, इस सुबह
देखती हूँ मैं सूरज की
किरणों से सुन्दर बन गई नदी।

~~आती~~ आती हूँ मैं, इस
नदी की तट पर, इस रात
निखरती हूँ, मैं
या मुसकुराती नदी.

कितना सुन्दर, कितना शांत
है ~~भग~~ भगवान, किसका प्रतीक है
या नदी की शांत
कहती हूँ मैं.

लेकिन क्योंकि मानव
अपना क्रूर मनोभाव
कैसे प्रकट है इस
शांत नदी को और प्रकृति को?